प्रकाशन तिथि : 01 नवम्बर, 2020
प्रेषण तिथि : 04 नवम्बर, 2020

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 24 अंक 16 कुल पृष्ठ: 8 एक प्रति: रुपए 7.00 वार्षिक : रुपए 150/-

साप्ताहिक उद्बोधन माला आयोजित कर दी श्रद्धांजलि

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवकों ने अपने द्वितीय संघ प्रमुख एवं कृतज्ञ समाज ने अपने ख्यातिनाम सेवक श्रद्धेय आयुवानसिंह जी हुडील को उनकी 100वीं जयंती पर जन्म शताब्दी सप्ताह मनाकर श्रद्धांजलि अर्पित की। 11 से 17 अक्टूबर तक उनके जीवन के विभिन्न आयामों को समेटे एक साप्ताहिक उद्बोधन माला का आयोजन किया गया जिसे श्री क्षत्रिय युवक संघ से संबद्ध सोशल मीडिया साधनों द्वारा वर्चुअल रूप से प्रसारित किया गया। 17 अक्टूबर को उनके जन्म दिवस पर विभिन्न स्थानों पर सीमित संख्या में एकत्र होकर भौतिक रूप से भी श्रद्धांजलि दी गई। अंतिम दिन उनकी जयंती के दिन माननीय संघ प्रमुख श्री के द्वारा अपने पूर्ववर्ती को शब्दांजलि दी गई। इस उद्बोधन माला में प्रसारित उद्बोधनों का संपादित अंश यहां प्रकाशित किया जा रहा है।

'आयुवानसिंह जी का जीवन एक ग्रंथ, जिसे पढ़ने की आवश्यकता'

संघ प्रमुख श्री की शब्दांजलि

आयुवानसिंह जी का जन्म शताब्दी समारोह मनाना है यह एक वर्ष पूर्व ही तय कर लिया गया था किन्तु विश्वव्यापी महामारी के कारण एक जगह एकत्रित होकर यह कार्यक्रम नहीं किया जा सका। इसलिए ऑनलाइन हम यह कार्यक्रम कर रहे हैं जो 11 से 17 अक्टूबर तक आयोजित किया जा रहा है। आयुवानसिंह जी साहब के बारे में कुछ बोलना मेरे जैसे व्यक्ति के लिए मुमकिन नहीं है किंतु उत्तरदायित्व बोध के कारण बोलना पड रहा है। उनसे मेरा सबसे पहला परिचय तत्कालीन गवर्नमेंट हॉस्टल में स्वतंत्र पार्टी के ऑफिस में मेरे एक मित्र के साथ में हुआ था। इसके बाद जयपुर में अध्ययनरत रहते हुए मेरी इच्छा हुई कि उनसे मैं मिलता रहूं, संयोग ऐसा बैठा कि कैंसर की बीमारी से वह पीड़ित रहे और जयपुर के एस एम एस हॉस्पिटल में भर्ती रहे तब मैं कॉलेज से आते हुए उनके पास जाने लगा। एक दिन उनके गले की गांठ की बायोप्सी होनी थी तब संयोग से मैं कॉटेज वार्ड में गया हुआ था। वो ऑपरेशन थिएटर से सीधे कॉटेज वार्ड में आये उस समय मेरे अतिरिक्त कक्ष में कोई नहीं था। वो कुछ असहज से थे, छाती पर श्वेत केश राशि लाल हुई थी। (शेष पृष्ठ 7 पर)

'भूस्वामी आंदोलन के द्वारा समाज में चेतना के संवाहक बने आयुवान सिंह जी'

उद्बोधन माला

उद्बोधन माला में 14 अक्टूबर को 'पूज्य आयुवानसिंह जी और सामाजिक आंदोलन' विषय पर उद्बोधन देते हुए वरिष्ठ स्वयंसेवक माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी ने बताया कि आज के युवा ने तो भूस्वामी संघ का नाम भी नहीं सुना होगा। भूस्वामी शब्द का अर्थ है जो भूमि का स्वामी हो। राजतंत्र में सैनिकों की सेवा और वीरता के बदले में राज्य अथवा राजा द्वारा जागीर के रूप में भूमि प्रदान की जाती थी वह संपत्ति के रूप में वंशानुगत रूप से हस्तांतरित होती थी। आजादी के बाद राजाओं को राज्य के बदले में जो प्रीविपर्स (विशेषाधिकार) दिए गए थे वे भी बाद में वापिस ले लिए गए। इसी प्रकार जागीरदारी उन्मूलन कानून लाया गया जो छोटे जागीरदारों की जमीनों से उनको बेदखल करने वाला था। इसके विरोध में सर्वप्रथम जोधपुर में भूमिधर संघ नाम से संगठन बनाकर सत्याग्रह के माध्यम से अपनी बात रखने का प्रयास किया गया। कुचामन में उसका शिविर रखा गया तथा नावां में सत्याग्रह करके गिरफ्तारियां दी गई। इसी बीच आयुवानसिंह जी जोधपुर में 'क्षत्रिय वीर' नाम से एक पत्र निकाला करते थे जिसमें समाज के प्रति होने वाले अन्याय का खुलासा किया जाता था। इससे हमारे समाज के विपक्षी परेशान रहते थे। जयनारायण व्यास उस समय वहां के पत्रकार संघ के मंत्री थे इसलिए उनकी आपस में टकराहट होती थी। बाद में जब जयनारायण व्यास मुख्यमंत्री बने तो 'क्षत्रिय वीर' को प्रतिबंधित करने का प्रयास किया गया और आयुवान सिंह जी को गिरफ्तार भी किया गया। इन घटनाओं से आयुवानसिंह जी की समाज में पहचान बनी हालांकि वे अत्यंत साधारण परिवार से थे। जब जागीर उन्मूलन का जगह-जगह विरोध हो रहा था तब गोविंद वल्लभ पंत की अध्यक्षता में राजस्थान सरकार और राजस्थान क्षत्रिय महासभा में समझौते की रूपरेखा बनाई गई। (शेष पृष्ठ 2 पर)

'हम हमारे पर ही विजय प्राप्त करें'

आज दशहरा या विजयादशमी पूरे संसार में मनाई जा रही है। सामान्यतया इतिहास में हमने पढ़ा कि रावण को राम ने आज के दिन मारा इसीलिए हम दशहरा मनाते हैं। राम व रावण किसके प्रतीक हैं। यह भी हम सबने पढ़ा है इसीलिए अच्छाई की बुराई पर, प्रकाश की अंधकार पर एवं अन्याय पर न्याय की विजय के पर्व के रूप में इसे मनाते हैं। हर साल रावण के मरने की खुशियां मनाते हैं और हर साल रावण वापस आ जाता है। यह बुराई का आना-जाना हर युग में चलता रहा है। स्थायी उपाय न होने तक रावण इसी प्रकार आता रहेगा, मरता रहेगा और आपाधापी बनी रहेगी। श्री क्षत्रिय युवक संघ के केन्द्रीय कार्यालय 'संघशक्ति' की साप्ताहिक शाखा में विजयादशमी के उपलक्ष में अपना संदेश देते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपर्युक्त बात कही। उन्होंने कहा कि अच्छाई व बुराई हमने नहीं बनाई है। परमपिता परमेश्वर ने बनाई है। जिसने सृष्टि का सृजन किया उसने ही यह बनाई। वही संहार और पालन भी करता है। हमें श्री क्षत्रिय युवक संघ से प्रेरणा मिली, सुनने और पढ़ने को मिला, वातावरण मिला। (शेष पृष्ठ 7 पर)

'भूस्वामी आंदोलन के द्वारा समाज में चेतना के संवाहक बने आयुवान जी'

(पेज एक से लगातार)

चूंकि राजस्थान क्षत्रिय महासभा उस समय कांग्रेस समर्थित थी इसलिए समाज में विभिन्न स्तरों पर इस प्रक्रिया पर विरोध जताया गया। दांता ठाकुर साहब, रघुवीरसिंह जी जावली जैसे वरिष्ठ व्यक्तियों ने एक समिति बनाकर प्रस्ताव भेजा कि इस समिति को भी प्रक्रिया में शामिल किया जाए ताकि वे भी समाज की बात को रख सकें। परंतु राजस्थान सरकार और राजस्थान क्षत्रिय महासभा दोनों ने ही इसे स्वीकार नहीं किया तथा मनमाना समझौता कर लिया जिसमें छोटे जागीरदारों की उपेक्षा की गई। तब इस समझौते का विरोध प्रारम्भ हुआ। इस दौरान मई 1955 में किशनगढ़ (अजमेर) में श्री क्षत्रिय युवक संघ का शिविर था जो 28 मई को पूरा हुआ। शिविर समापन के बाद उस समय के कुछ वरिष्ठ स्वयंसेवकों को लेकर आयुवानसिंह जी जयपुर आये और आंदोलन करने की बात कही। बिना संसाधनों के आंदोलन की बात पर सभी साथियों को आश्चर्य हुआ। मुश्किल से उनके पास उस समय 16-17 रुपये थे। किंतु आयुवानसिंह जी ने कहा कि चिंता नहीं करें, सब व्यवस्था हो जाएगी। समाज के व्यापक हिस्से तक पहुंच बनाने के लिए उस समय के चर्चित सामाजिक व्यक्तियों को साथ लेने का निर्णय किया गया और ठाकुर साहब मदन सिंह जी दांता को भूस्वामी संघ का अध्यक्ष बनाया गया। विभिन्न सामाजिक कार्यों में सक्रिय रघुवीर सिंह जी जावली को भी साथ में लिया गया। यद्यपि आन्दोलन के प्रणेता व रणनीतिकार आयुवानसिंह जी ही थे। 1 जून 1955 को सुबह 3 बजे सत्याग्रह प्रारम्भ कर दिया गया। इससे पूर्व चौपासनी अधिग्रहण के समय किये गए आंदोलन के अनुभवों के आधार पर अहिंसात्मक आंदोलन का निर्णय आयुवानसिंह जी द्वारा लिया गया। संघ के स्वयंसेवकों द्वारा गांव-गांव जाकर लोगों को गिरफ्तारियां देने हेतु तैयार किया जाने लगा। उस समय तनसिंह जी पाकिस्तान में अपने ससुराल गए हुए थे। जैसे ही उन्हें आंदोलन प्रारम्भ होने के समाचार मिले तो तुरंत वहां से बाड़मेर आकर आंदोलन प्रारम्भ किया तथा वहां पर सभी को सक्रिय करके जयपुर आये। आंदोलन के दौरान यद्यपि अधिक संख्या में जागीरदार साथ नहीं आये किन्तु साधारण समाजबंधुओं के सहयोग से आंदोलन ने गति पकड़ी और राजस्थान की सभी जेलें भर गई। आयुवानसिंह जी भूमिगत रहे और सरकार अपने भरसक प्रयत्न के बाद भी उन्हें पकड़ नहीं सकी। अंततः मुख्यमंत्री ने बातचीत करके एक लिखित आश्वासन दिया गया किन्तु इसके क्रियान्वयन को लेकर पुनः मतभेद उत्पन्न हो गए। तब 19 दिसंबर, 1955 को पुनः आंदोलन प्रारम्भ किया गया। आयुवानसिंह जी तब तक भी भूमिगत ही थे। मार्च 1956 में उन्हें जोधपुर में गिरफ्तार किया गया जहां उन्होंने जेल में अनशन प्रारम्भ कर दिया। तब उन्हें टोंक जेल भेजा गया जहां तनसिंह जी और सवाईसिंह जी धमोरा पहले से बंद थे। तब इन दोनों ने भी आयुवानसिंह जी के साथ अनशन प्रारम्भ कर दिया। जयपुर जेल में भी सैकड़ों सत्याग्रहियों ने

अनशन प्रारम्भ कर दिया था। तब प्रशासन ने इनकी मांगे मानकर इन्हें राजनैतिक बंदी स्वीकार किया। आंदोलन की तीव्रता के कारण केंद्र सरकार तक भी बात पहुँची। जयपुर महाराजा आदि के प्रयासों से नेहरू जी ने हस्तक्षेप किया और भूस्वामी संघ के 11 सदस्यों को 15 दिन की पैरोल पर छोड़ने का निर्देश नेहरूजी द्वारा दिया गया। जब इन सदस्यों की नेहरू जी से बातचीत हुई तो आयुवानसिंह जी, तनसिंह जी और रघुवीरसिंह जी ने एक स्मरण पत्र लिखा जो नेहरूजी को सुनाया गया। इसे सुनकर नेहरू जी भी भावुक हो गए और उन्होंने राजस्थान सरकार को जल्दी से जल्दी समझौते के निर्देश दिए। पैरोल की अवधि समाप्त होने पर सभी सदस्यों को पुनः गिरफ्तार कर लिया गया। किन्तु आयुवानसिंह जी सरकार को उग्र आंदोलन की चेतावनी देते हुए भूमिगत हो गए। तब रामनारायण चौधरी ने पत्र लिखकर उन्हें गिरफ्तार होने का आग्रह किया। इसे स्वीकार करके वे गिरफ्तार हो गए। इसके बाद सरकार से बातचीत का क्रम पुनः प्रारम्भ हो गया। इस दौरान सरकार द्वारा जेलों में बंद आंदोलनकारियों पर विभिन्न तरीकों से अत्याचार भी किए गए फिर भी आंदोलनकारियों का उत्साह कम नहीं हुआ और अंत में सरकार को समझौता करना पड़ा। हालांकि उस समझौते के अनुसार जो लाभ हुआ उसे लोगों ने ठीक से पहचाना नहीं। महाराणा संग्रामसिंह के बाद सामूहिक रूप से किया जाने वाला यह पहला सामाजिक प्रयास था जिसमें हमने अपने पतन के कारणों का सामूहिक विरोध किया हो। इस आंदोलन में अन्य लोगों ने भी हमारा साथ दिया। रामराज्य परिषद, हिन्दू महासभा, अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा आदि संस्थाओं ने भी सक्रिय सहयोग दिया। सौराष्ट्र से भी हरिसिंह जी गढ़ुला के नेतृत्व में अनेक सहयोगी आये। संघ के माध्यम से हुए इस आंदोलन के संघ और समाज पर भी व्यापक प्रभाव हुए जिनमें सामाजिक भाव का जागरण सर्वाधिक प्रमुख है। इस आंदोलन के प्रणेता के रूप में आयुवानसिंह जी को सदैव स्मरण किया जाएगा।

13 अक्टूबर को 'पूज्य आयुवानसिंह जी और मेरी साधना' विषय पर बोलते हुए संचालन प्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्यांकाबास ने कहा कि श्रद्धेय आयुवानसिंह जी ने 'मेरी साधना' पुस्तक के समर्पण में लिखा है कि 'मेरी साधना के निर्भय पथिक और जीवन यात्रा के चिर संगी, संघबन्धुओं के अतिरिक्त अन्य हाथों में यह पवित्र भेंट समर्पित करने का साहस भी तो नहीं होता।' अर्थात संघ की साधना को समर्पित स्वयंसेवकों के लिए यह पुस्तक लिखी गई है। इस पुस्तक के 111 अवतरणों में आयुवानसिंह जी ने एक ऐसे व्यक्ति के चरित्र का वर्णन किया है जिसके मन में समाज के लिए कुछ करने की हूक उठती है। वही 'मेरी साधना' का साधक है। प्रारम्भिक अवस्था में साधक अनेक दिशाओं में बढ़ने का आकर्षण अनुभव करता है। परंतु उन दिशाओं में बढ़ने पर जब वह उस मार्ग की व्यर्थता को अनुभव करता है तो वह निराश हो जाता है। ऐसी निराशा की अवस्था में भी साधक का संकल्प जागृत रहता है तब अपनी अंतश्चेतना से साधक को आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती है। जब वह इस मार्ग पर बढ़ने लगता है तो उसे वह ईश्वरीय संदेश सुनाई देने लगता है जो सृष्टि के कण-कण में गुंजायमान है। इस अनुभूति से आनंदमग्न होकर जब वह आगे बढ़ना प्रारम्भ करता है तो उसके मार्ग में अनेक बाधाएं भी आने लगती हैं। सर्वप्रथम बाधा तब आती है जब वह हृदय से आने वाले संदेश को बुद्धि और तर्क की कसौटी पर कसने लगता है। बुद्धि के वश में होकर साधक शास्त्रों, सामाजिक विधि-विधानों को नकार देता है। ऐसा करते ही उसकी साधना रुक जाती है। साधना की गति में उत्पन्न इस अवरोध पर जब साधक चिंतन करता है तब उसे समझ आता है कि श्रद्धा और विश्वास को खोने से ही यह स्थिति आई है। तब साधक अपने श्रद्धा और विश्वास को सबल बनाने के प्रयत्न में लग जाता है। श्रद्धा और विश्वास के दृढ़ होने पर तर्क भी स्वतः ही उनका सहगामी बन जाता है। ऐसा होने पर साधक को अपने कर्त्तव्य का भी बोध हो जाता है और उसे यह भी अनुभव हो जाता है कि उसका कर्त्तव्य ही उसका धर्म, उसकी साधना का साध्य और उसके जीवन का हेतु है। कर्त्तव्य ही स्वधर्म है और स्वधर्म का पालन ही परम-लक्ष्य की प्राप्ति का मार्ग है। पुस्तक के आगामी अवतरणों में श्रद्धेय आयुवान सिंह जी ने हमारे समाज की वर्तमान स्थिति और उसके संसार पर पड़ने वाले प्रभाव का भी चित्रण किया है। क्षात्रधर्म की शाश्वत आवश्यकता को रेखांकित करते हुए पूज्यश्री कहते हैं कि क्षात्रधर्म के पालन में हमारे चारों पुरुषार्थों की स्वाभाविक पूर्ति निहित है। पुस्तक में आगे आयुवानसिंह जी ने साधक के शत्रु और मित्रों का परिचय भी प्रस्तुत किया है जिससे साधक उनकी पहचान कर के अपनी साधना में निर्बाध गति से आगे बढ़ा सके। स्वार्थ, कायरता, कृपणता, फूट, प्रलोभन जैसे शत्रुओं से साधक को सदैव सावधान रहने की आवश्यकता तो है ही साथ ही अभ्यास और उत्साह जैसे साधना के मित्रों का सक्रिय सहयोग प्राप्त करने की भी उतनी ही आवश्यकता है। साधना में अपने परिजनों की ममता पर भी साधक को विजय प्राप्त करनी होती है। त्याग और बलिदान से ही यह साधना जीवित रह सकती है। जो इस साधना मार्ग पर गल कर साध्यमय हो जाता है वही साधक सफल हो सकता है। ऐसे साधक को कोई भी विरोध विचलित नहीं कर सकता। इस पुस्तक में श्री क्षत्रिय युवक संघ की साधना के साधक की विभिन्न परिस्थितियों में संभावित मनोदशा का पूर्ण वर्णन किया है। साधना के अन्तर्गत आने वाले संघर्षों का सांगोपांग वर्णन पूज्य आयुवानसिंह जी ने इस पुस्तक में किया है। संघ के शिविरों में इस पुस्तक पर चर्चा तो की ही जाती है साथ ही इस मार्ग पर चलने का व्यावहारिक अभ्यास भी किया जाता है।

इसी प्रकार उद्बोधनमाला की अगली कड़ी में 'पूज्य आयुवान सिंह जी और राजनीति' विषय पर बोलते हुए संघ के केन्द्रीय कार्यकारी रेवन्त सिंह पाटोदा ने बताया कि राजनीति पूज्य आयुवान सिंह जी का प्रिय विषय था। 'मेरी साधना' पुस्तक के 19वें अवतरण में उन्होंने राजनीति के सम्बन्ध में लिखा है - 'राजनीति मेरी चेरी, पर अब मैं उसका दास, नहीं खिलौना। यह असह्य है देव!

(शेष पृष्ठ 6 पर)

।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।।

हार्दिक श्रद्धांजलि एवं वंदन

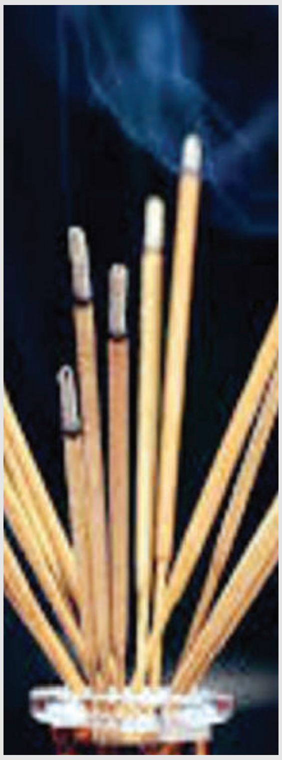

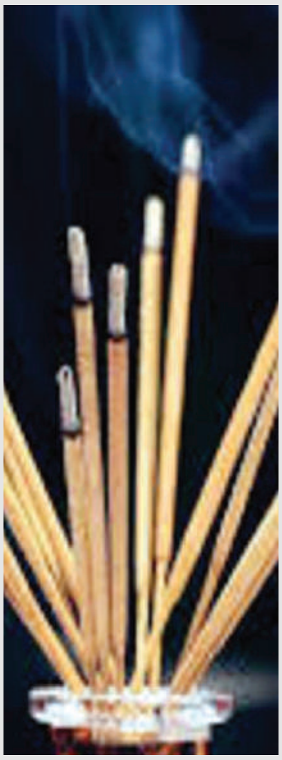

श्री क्षत्रिय युवक संघ के वयोवृद्ध स्वयंसेवक, हम सबके मार्गदर्शक और आदर्श शिक्षक श्रद्धेय इन्द्र सिंह जी रानीगांव के देहावसान पर हार्दिक श्रद्धांजलि एवं उनके मार्गदर्शक व्यक्तित्व को श्रद्धापूर्वक नमन।

श्रद्धानवत

महावीरसिंह, देणोक	**मनोहरसिंह**, दुजार	**विक्रमसिंह**, मिरगानैणी	**चेनसिंह**, सिराणा
मनोहरसिंह, कुकनवाली	**राजूसिंह**, काठाड़ी	**प्रेमसिंह**, रेवाड़ा	**राजूसिंह**, बांटा
बाबूसिंह, सोनू	**रघुवीरसिंह**, जाफली	**गिरधरसिंह**, सिरघुवाला	**रूपसिंह**, शेरगढ़
भोजराजसिंह, मराज का तला	**भोमसिंह**, तिबनियार	**भंवरसिंह**, निम्बोला	**लीलू सिंह**, सुल्ताना
नारायण सिंह, आइन्ता	**गुलाबसिंह**, शोभाला जेतमाल	**छतरसिंह**, सोढाकोर	**दिलीपसिंह**, गड़ा
भगवतसिंह, करड़ा	**खुमानसिंह**, मिठौड़ा	**बाबूसिंह**, रेवाड़ा जेतमाल	**पन्नेसिंह**, रेवाड़ा जेतमाल
लाधुसिंह, रेवाड़ा जेतमाल	**विक्रमसिंह**, आकोली	**मनोहरसिंह**, आकोड़ा	**थानसिंह**, भादरिया
लाधुसिंह, मालूंगा	**ईश्वरसिंह**, मवड़ी	**दिलीपसिंह**, ईडवा	**मोकमसिंह**, फुलिया
जब्बरसिंह, भिंयाड़	**कर्णसिंह**, मूठली	**बुधसिंह**, केतु	**सुरेंद्रसिंह**, कुलाची
सवाईसिंह, धुड़ीला	**लूणसिंह**, भाडली	**पर्बतसिंह**, वरिया	**खेतसिंह**, चांदेसरा

एवं समस्त स्वयंसेवक सूरत

।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।।

संपादकीय

समाज सेवा : पैशन या फैशन

पैशन (Passion) और फैशन (Fashion) दोनों ही अंग्रेजी शब्दों में वर्तनी की दृष्टि से कोई बड़ा अंतर नहीं है और उच्चारण में भी तनिक सा ही अंतर है लेकिन इनके अर्थ का अंतर बड़ा है। इनके उत्पादक कारण में बड़ा अंतर है और यही अंतर इन दोनों शब्दों के व्यवहारिक रूप में बड़े अंतर पैदा कर देता है। फैशन जहां नकल पर आधारित है, देखा देखी पर आधारित है, जमाने के प्रवाह में बहने का प्रयत्न है वहीं पैशन का आधार कुछ कर गुजरने की चाह होती है। वह जमाने के अनुसार चलने की अपेक्षा जमाने को अपने अनुसार चलाने का उपक्रम होता है। वह जमाने के प्रवाह को मोड़ने के लिए पैदा होती है। पैशन से प्रेरित व्यक्ति जमाने की देखा देखी नहीं चलता बल्कि जमाने को अपने पीछे चला देता है। वहीं फैशन की उत्पादक शक्ति आत्म प्रदर्शन होता है। अन्यों के बीच अन्यों जैसा दिखना होता है। इसमें होने की अपेक्षा दिखने का भाव अधिक होता है वहीं पैशन की उत्पादक शक्ति पीड़ा होती है। अंतर में लगी वह आग होती है जिसको बुझाने के लिए क्रियाशीलता ही एक मात्र उपाय होता है। पैशन का हिन्दी में शाब्दिक अर्थ जुनून होता है। जुनून केवल दिखाने के लिए नहीं होता। किसी लक्ष्य के लिए पागलपन तक के स्तर की सक्रियता जुनून कहलाती है और यह उस लक्ष्य के प्रति रागात्मक लगाव के बिना नहीं होती, उसके प्रति पीड़ा के बिना नहीं होती, इसीलिए पैशन का उत्पादन पीड़ा से होता है। इस प्रकार फैशन और पैशन में उतना ही अंतर है जितना आत्म प्रदर्शन और पीड़ा में होता है। इसी प्रकार फैशन और पैशन की उम्र में भी अंतर होता है। फैशन अल्पजीवी होती है, बहुत जल्दी बदल जाती है, बहुत जल्दी उबाने वाली होती है लेकिन पैशन दीर्घजीवी होती है, जीवन के लक्ष्य से जुड़ी होती है इसीलिए पूरे जीवन की प्रेरक शक्ति होती है। इसकी उत्पादक पीड़ा जब तक शांत नहीं होती तब तक यह बनी रहती है।

अब इस आलेख के तीसरे शब्द 'समाज सेवा' की चर्चा करते हैं। 'समाज सेवा' शब्द भी आजकल श्रेष्ठ शब्द नहीं माने जाने वाले शब्दों में शामिल होता जा रहा है क्योंकि इसको धारण करने वाले लोगों का आचरण इस शब्द के वास्तविक अर्थ से दूर होता जा रहा है। राजनीतिक लोग जब से इसे स्वयं के लिए उपयोग करने लगे हैं तब से इस शब्द की लगातार दुर्गति होती जा रही है। लेकिन इसके शुद्ध एवं सात्विक अर्थ में लेवें तो यह शब्द पैशन है, फैशन नहीं। हालांकि आजकल हमें समाजसेवियों की श्रेणी में या तो इस शब्द को बदनाम करने वाले सदाचरणहीन लोग नजर आते हैं या फिर फैसनेबल समाजसेवी नजर आते हैं। फैशनेबल समाज सेवी वे लोग हैं जो दूसरों की देखादेखी समाज सेवा प्रारम्भ करते हैं। समाज सेवियों की सूची में नाम लिखवाने को समाज सेवा प्रारम्भ करते हैं। ऐसे लोग प्रारम्भ तो धूमधाम से करते हैं लेकिन प्रेरणा के केन्द्र बाहर होने से, दूसरे लोग होने से जल्दी ही ऊब भी जाते हैं। जिनको देखकर काम शुरू किया था, उनके निष्क्रिय होने पर मार्ग में आने वाली कठिनाइयों से परेशान होकर अपने सुखों पर होने वाली चोटों को सहन न करने के कारण, उनकी प्राथमिकताओं में उनकी समाज सेवा की भावना आड़े आने पर, कोई नया फैशन आ जाने पर या इस मार्ग के लिए आवश्यक अहर्तओं को हासिल नहीं कर पाने के कारण 'उनके सीता राम जी सटक जाते हैं और थाली लौटा पटक जाते हैं।' आज हमें समाज सेवक के नाम से प्रायः ऐसे ही लोगों के दर्शन होते हैं। इनका आचरण समाज सेवा शब्द का शोषण करने वाले धूर्त राजनीतिज्ञों जैसा तो नहीं होता, भावनाएं भी दूषित नहीं होती लेकिन उत्पादक शक्ति 'पीड़ा' न होने के कारण इन फैशनेबल समाज सेवियों का सेवाकाल बहुत छोटा होता है। लेकिन जिनके लिए समाज सेवा 'पैशन' होता है वे तब तक उसे नहीं छोड़ते जब तक की उसकी उत्पादक शक्ति पीड़ा शांत नहीं हो जाती। ऐसे लोग इस बात से प्रभावित नहीं होते की कौन-कौन अभी उनके साथ हैं और कौन छूट गए हैं। इसीलिए तो पूज्य तनसिंह जी ने लिखा है, '**है न लेखा कौन साथी, साथ हैं या चल दिए। दीप का जीवन है केवल नित्य जलने के लिए।**' श्री क्षत्रिय युवक संघ में सेवा का अर्थ पैशन है, जुनून है, इसकी जनक पीड़ा है और उस पीड़ा की शांति के लिए व्यक्ति क्रियाशील होता है। यह पीड़ा व्यक्ति के जीवन लक्ष्य से जुड़ी हुई है इसीलिए संघ मार्ग पर चलने वाले का Passion (जुनून) जीवन भर बना रहता है। लेकिन संघ भी उसी समाज में काम करता है जिसमें 'समाज सेवा' शब्द को बदनाम करने वाले धूर्त लोग भी हैं तो देखादेखी प्रवृत होने वाले फैशनेबल लोग भी हैं। इसीलिए संघ के सम्पर्क में ऐसे लोग भी आते हैं और साथ भी चलने लगते हैं। लेकिन धूर्त लोग लंबे समय तक साथ नहीं चल पाते क्योंकि अपने स्वार्थ के लिए समाज सेवा को ढाल बनाने की प्रवृत्ति यहां जल्दी उजागर हो जाती है और साथ ही अपने हेतु की पूर्ति में बाधा उत्पन्न होने पर वे किनारा कर लेते हैं। फैशनेबल समाज सेवक भी संघ के सम्पर्क में बहुतायत में आते हैं। वे संघ के क्रियाकलापों, संघ के लोगों से प्रभावित होकर जोश में काम करना प्रारम्भ करते हैं लेकिन स्वयं के अंदर पीड़ा एवं प्रेरणा जागृत नहीं कर पाने के कारण अपनी व्यक्तिगत मजबूरियों के आगे हार जाते हैं, फिर उनका कभी दूर कभी निकट का क्रम चलता रहता है। ऐसे ही लोगों में से किसी-किसी के मर्म को संघ छू देता है और पीड़ा जागृत हो जाती है तो फैशन पैशन में बदल जाता है और वे जुनूनी सहयोगी बन जाते हैं। ऐसे ही जुनूनी सहयोगियों के बल पर संघ की यात्रा निरंतर गतिमान है। संघ अपने सम्पर्क में आने वालों में इसी पीड़ा को जागृत करता है और फिर उन पीड़ितों को पीड़ा का प्रसार करने की प्रक्रिया उपलब्ध कराता है। हम अपने आपको पहचानें और यदि फैशन के स्तर पर हैं तो पैशन की ओर अग्रसर होवें क्योंकि तब ही हमारी संघ यात्रा सार्थक हो पाएगी।

खरी-खरी

पीड़क को पीड़ा का अहसास

आजकल एक शब्द देश की फिजाओं में गूंज रहा है, 'गोदी मीडिया'। यह शब्द तथाकथित बुद्धिवादी एवं वर्तमान विपक्ष बड़े जोर-शोर से उपयोग में लाते हैं। वे कहते हैं कि आज का मीडिया मोदी जी की गोदी में बैठा है इसीलिए 'गोदी मीडिया' बन गया है और केवल एक पक्ष को प्रस्तुत कर रहा है। देश की प्रमुख विपक्षी पार्टी का कहना है कि देश की सभी समस्याओं के लिए उनके शासन को जिम्मेदार ठहराया जा रहा है। उनके शासन में देश ने जो प्रगति की उसे छिपाकर केवल कमियों को उजागर किया जाता है। कुछ लोग तो मजाक में वर्तमान सरकार की विफलता के समय भी व्यंग्य में नेहरू जी का नाम लेकर कहते हैं कि इसके लिए भी नेहरू जी जिम्मेदार हैं। कुल मिलाकर आजादी के बाद लंबे समय तक देश के शासक रहे वर्ग की पीड़ा है कि उनको मीडिया के सहारे विशेष रूप से सोशल मीडिया के सहारे बदनाम किया जा रहा है। सत्ता ने मीडिया पर कब्जा कर लिया है और मीडिया सत्ता को प्रसन्न करने के लिए उन्हें निशाना बनाता है। यही पीड़ा देश के समस्त बौद्धिक संस्थानों पर कब्जा जमाए तथाकथित बुद्धिवादियों की भी है। वे भी ज्यों-ज्यों वहां से बेदखल हो रहे हैं और उनके सही गलत कारनामे प्रचार दुष्प्रचार के सहारे उद्घाटित हो रहे हैं तो वे भी पीड़ित हो रहे हैं। कुछ दिन पूर्व समाचार आया कि भारत के फिल्मी जगत (बॉलीवुड) के कुछ वष्ठि कलाकारों ने भी न्यायालय में गुहार लगाई है कि उन्हें बदनाम किया जा रहा है। जिस बॉलीवुड ने इतने लोगों को रोजगार दिया, देश को इतना रेवेन्यु देता है उसे ड्रगिस्ट, गन्दगी, नशेड़ी आदि नामों से पुकारा जा रहा है। इसीलिए न्यायालय से आग्रह किया गया है कि उन्हें इस प्रचार/दुष्प्रचार से बचाया जाए। इस प्रकार ये सब भी आजकल पीड़ित हैं और अपनी पीड़ा का इजहार कर रहे हैं। इस प्रकार अनेक लोग आज इस देश में इस प्रकार की पीड़ा से पीड़ित हैं और अपनी उस पीड़ा के अहसास को प्रकट भी कर रहे हैं। लेकिन लेख के शीर्षक में तो पीड़क शब्द का उल्लेख है। ये सब तो पीड़ित नजर आ रहे हैं फिर पीड़क कैसे हो गए? इनकी पीड़ा का इनको हो रहा अहसास पीड़क की पीड़ा का अहसास कैसे हो गया? तो वास्तविकता यह है कि ये अब तक पीड़क ही रहे हैं। इनके द्वारा दी गई पीड़ा को हमने लंबे समय तक झेला है और आज भी झेल ही रहे हैं। जरा याद करो फिल्मों का वह दौर जब हर फिल्म में बलात्कारी कोई ठाकुर हुआ करता था। किसी गरीब की संपत्ति को छीनने वाला कोई ठाकुर हुआ करता था। हर फिल्म का अत्याचारी खलनायक ठाकुर ही हुआ करता था। ये लोग कला के नाम पर एक पूरे समाज और उसकी संस्कृति, परम्पराओं व रीति रिवाजों को किस प्रकार रौंदे जा रहे थे और हम मजबूर से बन वह सब सहन कर रहे थे क्यों कि इनको उन सत्तासीनों का साथ हासिल था और आज भी है जो आज अल्प समय के लिए विपक्षी बनकर छटपटा रहे हैं। इन छटपटाते प्राणियों का जिक्र आया है तो हमें उस दौर को भी याद करना चाहिए जब हर बार कोई श्वेत वसना, चंचल रसना, विकृत वदना और म्लानमना व्यक्ति मंच पर खड़ा होकर इस राष्ट्र की हर समस्या के लिए हमें और हमारे पूर्वजों को दोषी ठहराया करता था और हम भी कहीं भीड़ का हिस्सा बनकर सुनने को मजबूर रहे थे और कमोबेस आज भी ऐसा ही है। जब वे अपने आपको तारणहार और हमें डुबाने वाले सिद्ध करने के लिए इसी प्रकार तंत्र का बेशर्मी से उपयोग कर पीड़ा दे रहे थे तब उन्हें ऐसा अहसास थोड़े ही था जो आज हो रहा है। ऐसी ही स्थिति उन तथाकथित बुद्धिवादियों की भी रही है। देश के प्रत्येक बौद्धिक संस्थान पर कब्जा जमाए इन लोगों ने हमारा चरित्र हनन करने में क्या कोई कसर रख छोड़ी थी? विद्यालयों के पाठ्यक्रम से लेकर हर उस सरकारी साधन का उपयोग किया गया जिससे हमारे चरित्र, हमारे इतिहास, हमारी परम्पराओं और हमारी संस्कृति को कलंकित किया जा सके। इन सभी पीड़कों को आज पीड़ा का अहसास हो रहा है। इस अहसास को प्रकट करने समय ये ऐसे बन रहे हैं जैसे संसार के सबसे अधिक पाक साफ लोग ये ही हैं और आज इन्हें प्रताड़ित किया जा रहा है। लेकिन यह समय का पहिया है जो सदैव घूमता रहता है। जिस प्रचार तंत्र का उपयोग कर इन्होंने हमारे कुछ नगण्य बदनाम उदाहरणों के सहारे हमारे पूरे समाज, संस्कृति, व्यवस्था एवं परम्परा को कलंकित करने के लिए दिन रात एक कर दिए थे वहीं प्रचार तंत्र जब आज इनके खिलाफ उपयोग हो रहा है तो ये तिलमिला रहे हैं,

(शेष पृष्ठ 6 पर)

'डर को भगाना है, सावधान रहना है, जड़ता को प्राप्त नहीं होना'

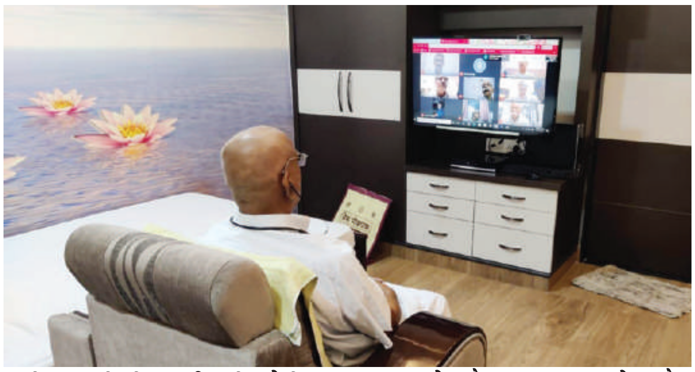

इस बीमारी के डर को भगाना है, यह हमारा कुछ नहीं बिगाड़ेगी, सावधान अवश्य रहना है, जागृत जरूर रहना है, सरकारी नियमों को जरूर मानना है किन्तु उसके कारण हम जड़ता को प्राप्त हो जाएं, हमारी चेतना ही समाप्त हो जाए, ऐसा नहीं होना चाहिए। 19 अक्टूबर को संघ के केन्द्रीय सहयोगियों एवं संभाग प्रमुखों की वर्चुअल बैठक को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपर्युक्त बात कही।

उन्होंने कहा कि आप सब ने बताया कि अनेक जगह बहुत अच्छा काम चल रहा है। कुछ जगह कार्य संतुष्टिपूर्ण है लेकिन कुछ स्थानों पर कमजोरी है। जिम्मेदार वो हैं जो अपनी जिम्मेदारी समझते हैं इसीलिए जिम्मेदारी समझकर जिम्मेदार बनें। मुझे आप सबकी सक्रियता की जानकारी मिलती रहती है, आप सब बहुत कुछ कर रहे हैं लेकिन पर्याप्त नहीं है और अधिक परिश्रम की आवश्यकता है। लग्न की जरूरत है। हमारा उद्देश्य हमें स्पष्ट दिखाई देना चाहिए। फिजिकली डिस्टेसिंग हमारी दूरियों को बढ़ा न देवें इस बात का विशेष ध्यान रखें। हम लोग एक दूसरे के नजदीक आएं। इसके लिए वर्चुअल एवं दैनिक शाखाएं बढ़ाएं। माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि एक और महत्वपूर्ण लेकिन कठिन काम है कि हम श्री क्षत्रिय युवक संघ का साहित्य अधिकतम लोगों तक पहुंचाएं।

इतना अनूठा हमारा साहित्य लोगों में प्राण फूंक सकता है, हम जानते हैं कि हम प्रारम्भ में कर्मशील नहीं थे लेकिन साहित्य ने (इन शाखाओं ने, शिविरों ने) हमारे में प्राण फूंके हैं, उस प्राण को और अधिक विस्तारित करके हम संघ को सब तक पहुंचाएं। संघ एवं संघ के कार्यक्रमों को गंभीरता से लेवें, जहां अच्छा हो रहा है वहां से दूसरे लोग प्रेरणा लेवें। निरन्तरता और नियमितता को टूटने न देवें। 19अक्टूबर को आयोजित इस वर्चुअल बैठक में प्रारम्भ में सभी संभाग प्रमुखों ने अपने-अपने संभाग के संघ कार्य की रिपोर्ट प्रस्तुत की। वर्चुअल माध्यम से हो रहे कार्यक्रमों के अलावा कोरोना प्रोटोकोल का पालन करते हुए हो रहे भौतिक कार्यक्रमों की भी जानकारी दी।

महिला शाखा का स्नेहभोज

संघ के केन्द्रीय कार्यालय में साप्ताहिक महिला शाखा लगती है जिसमें आसपास रहने वाले स्वयंसेवकों के परिवारों की महिलाएं शामिल होती हैं। 20 अक्टूबर की शाखा में माननीय संघ प्रमुख श्री से सभी महिलाओं ने स्नेहभोज का आग्रह किया। अनुमति मिलने पर सब महिलाओं ने मिलकर भोजन बनाया एवं 20 अक्टूबर की शाम का भोजन उन्होंने व उनके परिवारों ने 'संघशक्ति' में माननीय संघ प्रमुख श्री के सानिध्य में किया। कोरोना काल में लंबे समय बाद ऐसा कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम में कोरोना प्रोटोकॉल का पालन किया गया।

सम्राट मिहिर भोज की जयंती मनाई

18 अक्टूबर के प्रतिहार वंश के महान सम्राट मिहिर भोज की जयंती थी। मध्यकालीन भारत में मुस्लिम आक्रांताओं को भारत से बाहर खदेड़ने वाले मिहिर भोज को पूरे राष्ट्र में याद किया गया। सोशल मीडिया में ट्रेंड चलाए गए। जोधपुर जिले के इंदावाटी क्षेत्र के बेलवा, राजगढ़, कुई इंदा, देवातु, जिनजिनयाला, डेरिया, गोपालसर आदि दर्जन भर गांवों में भी सम्राट मिहिर भोज की जयंती मनाई गई। इस अवसर पर मिहिर भोज की जीवनी, चरित्र, अरबों और तुर्कों के विरुद्ध उनके अभियान एवं सम्राट के रूप में उनकी उपलब्धियों की चर्चा की गई। साथ ही इंदावाटी के स्थानीय पूर्वजों के इतिहास को सहेजने के प्रयासों को लेकर चर्चा की गई।

वेबसाइट के नवीन कलेवर का लोकार्पण

श्री क्षत्रिय युवक संघ की वेबसाइट को अद्यतन कर नवीन कलेवर में बनाया गया है। नए विषयों एवं फीचर्स के साथ बनी वेबसाईट का पूज्य आयुवानसिंह जी जन्म शताब्दी सप्ताह के तहत जयंती की पूर्व संध्या 16 अक्टूबर को माननीय संघ प्रमुख श्री द्वारा माननीय महावीर सिंह सरवड़ी व संचालन प्रमुख लक्ष्मणसिंह बैण्यांकाबास के साथ लोकार्पण किया गया।

संभाग स्तरीय वर्चुअल शाखाएं

कोरोना काल में मई माह से केन्द्रीय वर्चुअल शाखा प्रारम्भ हुई थी उसमें संघ साहित्य की विभिन्न पुस्तकों पर चर्चा हुई। 'मेरी साधना' पर हुई चर्चा के उपरान्त केन्द्रीय शाखा के स्थान पर संभाग स्तर पर वर्चुअल शाखाएं प्रारम्भ हुई हैं। अनेक संभागों में इससे पूर्व ही वर्चुअल शाखाएं चल रही हैं। नागौर संभाग की शाखा में सायं 8.15 से 9.15 तक मेरी साधना पर चर्चा हो रही है। महेसाणा संभाग की शाखा प्रातः 7.00 से 8.00 बजे तक लगती है जिसमें 'समाज चरित्र' पुस्तक पर चर्चा होती है। बीकानेर संभाग की शाखा शाम 8.30 से 9.10 बजे तक लगती है जिसमें 'समाज चरित्र' पुस्तक पर चर्चा होती है। बाड़मेर में भी सायं 8.30 से 9.30 बजे तक 'समाज चरित्र' पुस्तक पर चर्चा होती है। मेवाड़, मालवा व वागड़ संभाग की शाखा सायं 8.30 से 9.15 बजे तक लगती है यहां भी 'समाज चरित्र' पर चर्चा होती है। पोकरण में 8.15 से 9.15 बजे तक, सूरत प्रातः की 6.30 बजे प्रातः, सायं 8.10 से 9.00 बजे तक जैसलमेर की, मुंबई की सुबह 7 बजे व शाम 6.30 बजे तथा जालोर संभाग की सायं 8.00 से 9.00 बजे तक शाखा लगती है इनमें भी 'समाज चरित्र' पर चर्चा होती है। जयपुर संभाग की शाखा सायं 8.00 से 9.00 बजे तक लगती है जिसमें 'एक भिखारी की आत्मकथा' व जोधपुर संभाग की भी सायं 8.00 से 9.00 बजे तक लगती है जिसमें बदलते दृश्य पर चर्चा होती है। इसी प्रकार प्रति रविवार महिला स्वयंसेविकाओं की भी साप्ताहिक वर्चुअल शाखा लगती है।

जयपुर संभाग की वर्चुअल बैठक

जयपुर संभाग के स्वयंसेवकों की वर्चुअल बैठक 20 अक्टूबर को आयोजित की गई, जिसमें सभी स्वयंसेवकों ने इन दिनों स्वयं द्वारा किए जा रहे संघ कार्य के बारे में जानकारी दी एवं आगामी दिनों में क्या करेंगे इसके बारे में बताया। संभाग प्रमुख राजेन्द्रसिंह बोबासर ने करणीय कार्यों के बारे में बताया।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

(पृष्ठ दो का शेष)

भूस्वामी...

राजनीति मेरे चक्र द्वारा संचालित और नियंत्रित हो। मेरा उस पर शत प्रतिशत अधिकार हो।' राजनीति की दृष्टि से यह उनका आदर्श वाक्य है, जिसके चारों तरफ उनका राजनीतिक जीवन घूमता है। उन्होंने अपने राजनीतिक जीवन में पूरा प्रयास किया कि राजनीति पर उनका अधिकार हो। जिस प्रकार आजादी के पश्चात समूल रूप से हमें राजनीति से बाहर कर दिया गया, इतिहास में पहली बार पूरे देश में एक साथ राजनीति या सत्ता से हमको बेदखल किया गया, उस परिस्थिति में राजपूतों को राजनीति में एक विकल्प के रूप में प्रस्तुत करने के लिए आयुवानसिंह जी ने अपना पूरा राजनीतिक जीवन लगाया। पूरे राजस्थान और उसके बाहर भी उनका दर्शन एक वैकल्पिक राजनीतिक केंद्र बनाने का था।

उनका जन्म 17 अक्टूबर 1920 को हुआ और 7 जनवरी 1967 को वे संसार से चले गए। इस छोटे से जीवन में भी मात्र अंतिम 15 वर्ष उन्होंने सक्रिय राजनीति में बिताए। सर्वप्रथम 1952 के प्रथम आम चुनाव में जोधपुर के महाराजा हनवंत सिंह जी ने तत्कालीन राजनीति में समाज की स्थिति व भूमिका पर विचार के लिए एक बैठक बुलाई। उस समय आयुवानसिंह जी जोधपुर में मारवाड़ राजपूत सभा के सचिव हुआ करते थे। उस बैठक में आयुवानसिंह जी ने कुछ चुभने वाली बातें कही। इससे प्रभावित होकर बैठक के दो दिन बाद हनवंत सिंह जी ने आयुवानसिंह जी को मिलने बुलाया और उनसे उनके राजनीतिक दर्शन और योजना पर विस्तार से चर्चा की। आयुवानसिंह जी ने महाराजा को चुनावी राजनीति में उतरने की सलाह दी। महाराजा हनवंतसिंह जी जब इंग्लैंड में पढ़ते थे तब विश्व के ख्यातिनाम राजनेता विंस्टन चर्चिल के संरक्षण में वे रहे थे। उस समय राजनीति के सम्बंध में चर्चिल की जो सलाह थी वही सलाह आयुवानसिंह जी से सुनकर महाराज अत्यधिक प्रभावित हुए और आयुवानसिंह जी को अपना सलाहकार नियुक्त कर लिया। 1952 के चुनाव की पूरी योजना आयुवानसिंह जी द्वारा ही बनाई गई। कहा जाता है कि महाराजा का लोकप्रिय नारा 'म्है थासूं दूर नहीं' भी आयुवानसिंह जी ने ही दिया था। उस समय मारवाड़ की 33 विधानसभा सीटों में से 30 पर महाराजा व उनके समर्थित उम्मीदवार जीते। किन्तु दुर्भाग्य से चुनाव परिणाम आने से पहले ही हवाई दुर्घटना में हनवंतसिंह जी की मृत्यु हो गई। इस कारण आयुवानसिंह जी की योजना पूरी तरह सफल नहीं हो पाई। परंतु आयुवानसिंह जी ने हार नहीं मानी और समाज में राजनीतिक चेतना जागृत करने में लगे रहे। इसी दौरान भूस्वामी आंदोलन ने भी उनके व्यक्तित्व को प्रतिष्ठा प्रदान की। 1954 में वे संघ के संघप्रमुख भी बन चुके थे। साथियों व शुभचिंतकों के अतिशय आग्रह पर 1957 में लूणी विधानसभा से उन्होंने स्वयं ने भी चुनाव लड़ा किन्तु उसी समय लोकसभा चुनाव भी थे जिनमें जैसलमेर महारावल भी बाड़मेर-जैसलमेर से लड़ रहे थे। आयुवानसिंह जी ने अपना अधिकांश समय उनके समर्थन में बिताया जिससे लूणी में वे अधिक समय नहीं दे पाए और इसी कारण जीत नहीं पाए। 1959 में जब राजगोपालाचारी ने स्वतंत्र पार्टी की स्थापना की तब उसकी राजस्थान इकाई की अध्यक्षा महारानी गायत्री देवी को बनाया गया तथा आयुवानसिंह जी उसके संगठन मंत्री बने। 1959 से लेकर 1962 तक उन्होंने अथक परिश्रम किया जिसके परिणामस्वरूप 1962 के चुनाव में राजस्थान की 176 विधानसभा सीटों में से 87 सीटों पर स्वतंत्र पार्टी और अन्य विपक्षी के उम्मीदवार जीते। उन्होंने स्वयं भी नावां से चुनाव लड़ा किन्तु संगठन के लिये अधिक समय देने से इस बार भी अपने क्षेत्र के लिए समय नहीं निकाल पाए जिससे परिणाम फिर प्रतिकूल रहा। 1962 के बाद भी वे पार्टी के लिए अथक परिश्रम करते रहे परंतु इसी बीच वे कैंसर से पीड़ित हो गए तथा जनवरी 1967 में उनका देहावसान हो गया। इस छोटे से राजनीतिक जीवन में भी उन्होंने विशाल जनमत को प्रभावित किया। उनके राजनीतिक जीवन की घटनाओं से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण उनका उनका राजनीतिक दर्शन है। आयुवानसिंह जी का राजनीतिक दर्शन यह था कि क्षात्रधर्म एक राजधर्म है। क्षत्रिय के लिए सत्ता हासिल करना उसके धर्म का आदेश है। क्षत्रिय के धर्म का आदेश है कि वह राजनीति को अपने नियंत्रण में रखे। उनका यह मानना था कि सत्ता से च्युत होने पर क्षत्रिय का केवल राजनीतिक पतन ही नहीं होता बल्कि सभी तरफ से पतन हो जाता है और जब क्षत्रिय सत्तासीन होता है तब वह अपने उच्चादर्शों के उच्च प्रतिमान स्थापित करता है जिन तक हर कोई पहुंच नहीं पाता। इसीलिए उनका यह दृढ़ विश्वास था कि क्षत्रिय को सत्ता को अवश्य हासिल करना चाहिए। आगे उन्होंने बताया कि आयुवानसिंह जी का पूरा राजनीतिक दर्शन उनकी पुस्तक 'राजपूत और भविष्य' में प्रकट हुआ है। उन्होंने इस पुस्तक की अध्यायवार संक्षिप्त चर्चा करते हुए आयुवान सिंह जी के राजनीतिक दर्शन का पूरा खाका प्रस्तुत किया और बताया कि आयुवानसिंह जी के पूरे राजनीतिक दर्शन का मूर्त रूप श्री क्षत्रिय युवक संघ है। संघ हमारे सामाजिक भाव को जागृत कर सतोगुणीय बनाता है और संगठन द्वारा ऐसी शक्ति का निर्माण करता है जो पीड़ित और शोषित की रक्षा कर सके।

16 अक्टूबर को वर्चुअल उद्बोधनमाला की छठी कड़ी में 'पूज्य आयुवानसिंह जी और गुजरात' विषय पर वरिष्ठ स्वयंसेवक माननीय अजीतसिंह जी धोलेरा ने उद्बोधन दिया। उन्होंने बताया कि राजस्थान के हुडील गांव में आयुवानसिंह जी का जन्म 17 अक्टूबर 1920 को हुआ था। वे केवल संघ के द्वितीय संघप्रमुख ही नहीं, संघ के संस्थापक पूज्य तनसिंह जी के दाहिने हाथ बनकर रहे। आयुवानसिंह जी संघ कार्य के संदर्भ में कई बार गुजरात पधारे थे। इस दौरान सौभाग्य से मुझे भी उनका सान्निध्य प्राप्त हुआ था। पूज्य हरिसिंह जी गढ़ुला भूस्वामी आंदोलन के समय राजस्थान पधारे थे तब संघ का, तनसिंह जी का व आयुवानसिंह जी का उन्हें परिचय हुआ। उन्होंने प्रार्थना की कि संघ की यह प्रवृत्ति गुजरात में भी चलनी चाहिए जिससे वहां के युवा भी संस्कारित हो सकें। उनकी प्रार्थना पर संघ का परिचय देने हेतु आयुवानसिंह जी हरिसिंह जी बापू के साथ गुजरात पधारे। जामनगर, पोरबंदर, राजकोट, भावनगर इत्यादि कई स्थानों पर उन्होंने संघ का परिचय दिया। जब वे भावनगर में राजपुत छात्रावास में आये तब मैं भी छात्रावास में ही रहकर पढ़ता था। कार्यक्रम में नगर से भी कई लोग आए थे। स्वर्गीय महाराज कृष्णकुमार सिंह जी भी कार्यक्रम में पधारे थे। हम सब मुख्य अतिथि आयुवानसिंह जी की प्रतीक्षा कर रहे थे तब पूज्य हरिसिंह जी ने हमारे साथ बैठे हुए खाकी साफा, खाकी कमीज और मोटे कपड़े की धोती पहने हुए एक सज्जन को संबोधित करते हुए कहा कि 'आयुवानसिंह जी, आप वहां क्यों बैठे है? कृपया आगे आ जाइये।' हम सब उनको देखकर आश्चर्यचकित हो गए कि एक साधारण व्यक्ति की भांति वे हमारे साथ बैठे थे। आयुवानसिंह जी खड़े हुए व सबको नमस्कार करके अपने स्थान पर बैठ गए। हरिसिंह जी ने संघ व आयुवानसिंह जी का संक्षिप्त परिचय देकर आयुवानसिंह जी से बोलने का निवेदन किया। आयुवानसिंह जी ने एक घंटे तक अत्यंत प्रभावी उद्बोधन दिया। सभी लोग निस्तब्ध होकर उन्हें सुन रहे थे। स्वर्गीय महाराज कृष्णकुमार सिंह जी के सचिव भी वहां उपस्थित थे। वे भी अत्यधिक प्रभावित हुए तथा महाराजा से इस कार्य में सहयोग की बात कही। तब महाराजा ने उत्तर दिया कि इस कार्य में हमारा यही सहयोग हो सकता है कि हम इस में कोई हस्तक्षेप नहीं करे क्योंकि यह ऐसा काम है जो यही लोग कर सकते हैं। कार्यक्रम के बाद चर्चा में निश्चित किया गया कि दीपावली की छुट्टियों में इसी छात्रावास में संघ का एक शिविर आयोजित किया जाएगा। इसी निश्चय के अनुसार 12 से 18 अक्टूबर तक एक माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर आयोजित हुआ। यह संघ का गुजरात में पहला शिविर था जिसमें शामिल होने का मुझे भी सौभाग्य मिला। इसके बाद भी विभिन्न अवसरों पर पूज्य आयुवानसिंह जी का गुजरात में आना होता रहता था। महापुरुष सदैव दूसरों के लिए जिया करते हैं तभी वे सभी के लिए पूज्य बनते हैं। आयुवानसिंह जी भी ऐसे ही महापुरुष थे। इसके पश्चात माननीय अजीत सिंह जी ने आयुवानसिंह जी द्वारा राजकोट में दिए गए प्रवचन, जो उस समय के एक साप्ताहिक 'राष्ट्र शक्ति' में प्रकाशित हुआ था, पर चर्चा की तथा बताया कि किस प्रकार आयुवानसिंह जी ने राजपूत समाज की तत्कालीन आर्थिक, राजनीतिक व सामाजिक परिस्थितियों को गहराई से समझा और साथ ही समाज के समक्ष उस समय उपस्थित चुनौतियों के प्रति भी सावधान किया। ऐसे महापुरुष की चिरस्मृति हमें बनी रहे, उनके ऋण से उऋण होने के लिए हम उनके बताए मार्ग पर चलते रहें, श्री क्षत्रिय युवक संघ का कार्य करते रहें, यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

बीकानेर संभाग में प्रांतीय बैठकें

संभाग के दायित्वाधीन स्वयंसेवकों से सम्पर्क एवं समन्वय के क्रम में बीकानेर संभाग के चुरू प्रांत की बैठक 22 अक्टूबर को राजलदेसर में रखी गई। बैठक में संभागीय वर्चुअल शाखा, परस्पर सम्पर्क एवं संघ साहित्य पठन द्वारा स्वयं को सक्रिय रखने के उपायों पर चर्चा की गई। मैदानी शाखाओं एवं संघशक्ति, पथप्रेरक की ग्राहक सदस्यता को लेकर भी चर्चा की गई एवं दीपावली बाद सहयोगियों का दीवाली स्नेहमिलन आयोजित करने की संभावनाओं पर भी विचार किया गया। वयोवृद्ध स्वयंसेवक जालमसिंह मुंडोता से मिलकर उनके स्वास्थ्य की कुशल क्षेम पूछी। बैठक में संभाग प्रमुख रेवंतसिंह जाखासर व प्रांत प्रमुख राजेन्द्रसिंह आलसर सहित सभी स्वयंसेवक उपस्थित रहे। इसी प्रकार 25 अक्टूबर को श्री डूंगरगढ़ प्रांत की बैठक श्री डूंगरगढ़ में रखी गई जिसमें चुरू प्रांत की बैठक में हुए निर्णयों के संदर्भ में ही श्री डूंगरगढ़ के लिए कार्ययोजना बनाई गई एवं निरन्तर सम्पर्क बनाए रखने के लिए सभी को काम करने का निर्देश जारी किया। बैठक में सभाग प्रमुख रेवंतसिंह, प्रांत प्रमुख भागीरथ सिंह सेरुणा व वरिष्ठ स्वयंसेवक भरतसिंह सेरुणा सहित प्रांत के स्वयंसेवक शामिल रहे।

(पृष्ठ चार का शेष)

पीड़क...

पीड़ित हो रहे हैं लेकिन काश इनमें थोड़ा भी संतत्व होता तो आत्मचिंतन कर पाते और अपनी इस पीड़ा के साथ उस पीड़ा का भी अहसास कर पाते जो इन्होंने षड्यंत्रपूर्वक केवल और केवल अपनी दुकान जमाने के ओछे उद्देश्य से हमें पहुंचाई थी। लेकिन ये पीड़क है, इनमें ऐसी अपेक्षा करना बेकार है। यमराजों से जीवन की भिक्षा मांगना व्यर्थ है क्योंकि वे जीवन देते नहीं, लेते हैं। हम तो परमेश्वर से केवल प्रार्थना कर सकते हैं कि वे इन्हें सद्बुद्धि देवें। इन्हें भी देवें और उन्हें भी देवें जो आज समय के पहिए के ऊपरी छोर पर हैं। क्योंकि हमारे प्रति तो उनकी भी नजर इनसे मिलती जुलती ही है। कुछ मान बिन्दु हैं जो उनके और हमारे समान हैं इसीलिए हमें कुछ बातें अच्छी लगती हैं पर गहराई में कहीं वही तत्व काम कर रहा है जो पहले वालों में व्याप्त था। लेकिन फिर भी लेख के विषय के अनुरूप सोचें तो ये सब पीड़क आज जिस पीड़ा का अहसास कर रहे हैं उस पीड़ा से हर उसको गुजरना पड़ेगा जो मिथ्या प्रचार का सहारा लेगा। खरा सोना सदैव खरा ही रहता है। इसीलिए हमारा पुरुषार्थ हमारे उस खरेपन को संभालने, सजाने और संवारने का होना चाहिए जो इन पीड़कों के भागीरथ प्रयासों के बावजूद शेष है।

'आयुवानसिंह जी का जीवन एक ग्रंथ जिसे पढ़ने की आवश्यकता'

(पेज एक से लगातार)

मैं सहम सा गया, उनसे पूछा, क्या आप को बेहोश नहीं किया गया तो उन्होंने कहा कि यह जयपुर है, यहां राजनीति हर जगह घुसी हुई है। जो होना था हो गया अब एक महीने बाद मुंबई से रिपोर्ट आएगी। तब कुछ बात उन्होंने इस तरह से की थी जिसका अर्थ मैंने यह लगाया कि यदि कोई उनके पास आता रहे, तो ऐसे विकट समय में वह कुछ डिक्टेशन देना चाहते हैं। मैंने तुरंत हां भर ली। मैं आया जाया करने लगा। उन्होंने मुझे, एक कर्मपथ नाम का अखबार चलता था, उसके लिए कुछ मारवाड़ी में, कुछ अंग्रेजी में, कुछ हिंदी में लेखों का डिक्टेशन दिया। परमवीर हवलदार मेजर पीरूसिंह शेखावत के बारे में भी उन्होंने मुझसे एक लेख लिखवाया। इस प्रकार उनके पास मेरा आना जाना चालू रहा। बहुत लंबे समय से उनकी बीमारी की जो जांच हो रही थी उसके संबंध में उन्हें मुम्बई भेज दिया गया और मुम्बई में भी इलाज का कोई निश्चय नहीं हो रहा था। सुना ऐसा गया कि तत्कालीन महारानी गायत्री देवी ने उनको सहयोग दिया था मुम्बई जाने के लिए और वापस आने के बाद उन्होंने कई जगह पर इलाज करवाया और आखिर में दिल्ली के एम्स हॉस्पिटल में भर्ती थे, उस समय तन सिंह जी उनसे मिलने गए थे। मैं भी उन दिनों दिल्ली ही रहता था तनसिंह जी के साथ। वहां जाकर देखा तो हतप्रभ से रह गए कि पूरा शरीर पीला हो रहा था। तनसिंह जी आए तब वे खड़े हुए, फिर बैठ गए। तनसिंह जी का हाथ पकड़कर कुछ भावनात्मक शब्द बोले। उन्होंने कहा- 'तन जी अब बचना मुश्किल है अब जाना ही होगा'। जब मैंने घूम कर देखा, तन सिंह जी और आयुवानसिंह जी की आंखें तरल थीं। हम लोग जो साथ में थे, उनको देखकर हमारी आंखें भी तरला गई। 46-47 साल की छोटी उम्र में इस संसार में बहुत कुछ करके संसार को छोड़कर चले गए और छोड़ गए स्मृतियां। उन स्मृतियों को हम याद कर रहे हैं। मेरा उनसे कोई बहुत लंबा परिचय नहीं था। मैं जयपुर विद्याध्ययन करने आया तब से लेकर 2-3 वर्ष तक उनके साथ रहा। कभी कभी विनोद भी किया करते थे परंतु कभी उन्हें किसी दुःख अथवा पीड़ा की शिकायत करते नहीं सुना। उनका छोटी उम्र में ही विवाह हो गया था। तनसिंह जी और आयुवान सिंह जी कभी साथ में नहीं पढ़े, लेकिन उनका पत्र व्यवहार तब प्रारम्भ हुआ जब प्रजासेवक नाम के एक अखबार में तनसिंह जी का लेख पढ़कर आयुवान सिंह जी ने उन्हें एक पत्र लिखा जो उनकी फाइलों में आज भी पड़ा है। उनका पत्र व्यवहार निरंतर चलता रहा। फिर तनसिंह जी पिलानी चले गए और वहाँ रहते हुए 1944 की दीपावली को तनसिंह जी ने श्री क्षत्रिय युवक संघ नाम से संगठन बनाने का संकल्प किया जो 1946 में तनसिंह जी के नागपुर रहने के दौरान वर्तमान श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वरूप में सामने आया। आयुवान सिंह जी का प्रारंभिक शिविर संघ का तीसरा अथवा चौथा शिविर था। इसके पश्चात लगातार शिविरों में आते रहे तथा 1948 से समर्पित होकर संघ का कार्य करना प्रारम्भ किया तथा जीवन भर संघ के सहयोगी बने रहे। स्वतंत्र पार्टी के अस्तित्व में आने के साथ ही वे राजनीति से जुड़ गए तथा श्री क्षत्रिय युवक संघ की गतिविधियों में आना-जाना कम हो गया। 1996 में संघ की स्वर्ण जयंती के अवसर पर प्रकाशित संघशक्ति विशेषांक में तनसिंह जी, आयुवान सिंह जी और संघ का सारा वर्णन है। आयुवानसिंह जी जैसे जुझारू, हठी और लगन वाले लोग बहुत कम होते हैं। वो जब काम करते थे तो पीछे मुड़ कर नहीं देखते थे। परिस्थितियां कितनी भी विकराल हों वे कभी पीछे नहीं हटे। आयुवानसिंह जी के देहांत के बाद संघशक्ति का एक विशेषांक निकला था उसमें भी उनके संबंध में संस्मरण आदि प्रकाशित हुए थे। मैं ऐसा समझता हूँ कि **आयुवानसिंह जी का जीवन स्वयं एक ग्रंथ है, एक दस्तावेज है जिसे खोल कर पढ़ने की आवश्यकता है।** उन्होंने 'राजपूत और भविष्य' नाम से एक ग्रंथ लिखा जो उस समय श्री क्षत्रिय युवक संघ की ग्रंथमाला का पुष्प तो न बन सका लेकिन संघ के स्वयंसेवकों द्वारा वह बहुत पढ़ा गया तथा आज भी उसकी मांग रहती है। आयुवानसिंह स्मृति संस्थान द्वारा उस पुस्तक का प्रकाशन किया जाता है जहां से मंगवाकर यह पुस्तक संघ के शिविरों में उपलब्ध करवाई जाती है। इसके अतिरिक्त ममता और कर्त्तव्य, मेरी साधना, हमारी ऐतिहासिक भूलें जैसी पुस्तकें भी उन्होंने लिखी जो संघ के स्वयंसेवक पढ़ते ही रहते हैं। 'हमारी ऐतिहासिक भूलें' आयुवानसिंह जी द्वारा संघ के एक शिविर में दिया गया एक प्रवचन है जिसे तनसिंह जी ने लिखकर आयुवानसिंह जी को दिया था। उन्होंने इसे संशोधित किया तथा उसे पुस्तक का रूप दिया। आयुवान सिंह जी के सम्बन्ध में बोलते हुए अभी भी मैं भाव विभोर हो रहा हूँ। उनके प्रति जो श्रद्धा है उसी श्रद्धा के कारण 17 अक्टूबर 2019 से उनका जन्म शताब्दी वर्ष मनाया जा रहा है। यद्यपि महामारी के कारण हम एकत्रित होकर इन कार्यक्रमों को नहीं मना पा रहे हैं। आयुवानसिंह जी साहब जिन-जिन लोगों के संपर्क में आए उन पर उनका अत्यधिक प्रभाव रहा। 1952 में पहले आम चुनाव में वे बाड़मेर से तनसिंह जी को चुनाव लड़वाना चाहते थे। इसके लिए महाराजा हनवंतसिंह जी को निवेदन किया और उन्होंने आयुवानसिंह जी की बात मानते हुए तनसिंह जी को टिकट दिया। आयुवानसिंह जी और राजपरिवार के सहयोग से तनसिंह जी विजयी हुए और उनका राजनैतिक जीवन प्रारम्भ हुआ। आयुवानसिंह जी तनसिंह जी से उम्र में चार वर्ष बड़े थे। तनसिंह जी ने एक पत्र में आयुवानसिंह जी साहब को लिखा है कि 'बड़े तो बड़े ही हैं; बड़े, बड़े ही रहते हैं। मेरे जीवन में आपके साथ किसी भी प्रकार का कोई अंतर्विरोध रहा हो तो वो मेरी नासमझी के कारण है, आप उसे क्षमा कर दें।' ये सभी पत्र आज भी फाइलों में मौजूद है। मैं ऐसा समझता हूँ कि श्री क्षत्रिय युवक संघ के अतिरिक्त उनका कोई जीवन रहा हो, ऐसी मुझे कोई जानकारी नहीं है। यदि आपस में कोई मतभेद भी हुआ है तो मिल-बैठ कर के उसका समाधान निकाला गया है। 1959 में जैसलमेर के एक शिविर में श्री क्षत्रिय युवक संघ का संविधान बनाया गया जिसमें तनसिंह जी, आयुवानसिंह जी समेत अन्य वरिष्ठ लोग भी उपस्थित थे। उस समय आयुवानसिंह जी संघप्रमुख थे और उन्होंने विदाई के समय में एक पंक्ति ही बोली। कुछ लोग कहते हैं कि उन्होंने कहा कि 'मैं आपको विदाई देता हूँ' और कुछ लोग कहते हैं कि उन्होंने कहा कि 'मैं आपसे विदाई लेता हूँ।' इसके बाद क्षत्रिय युवक संघ के काम में उनका इंटरफेरेंस किसी भी प्रकार का नहीं रहा। श्री क्षत्रिय युवक संघ निर्बाध गति से तब भी चल रहा था, अब भी चल रहा है। भूस्वामी आंदोलन के बाद संघ के शिविरों की संख्या भी काफी बढ़ी। भू-स्वामी संघ आयुवानसिंह जी की ही देन थी। भूस्वामी आंदोलन और उसके परिणामों, समझौतो आदि के लिखित प्रमाण बहुत अधिक हमारे पास उपलब्ध नहीं है। मैं इतना ही कह सकता हूँ कि श्री क्षत्रिय युवक संघ उनके लिए बहुत प्रिय संस्था थी। मैंने सुना है कि संघप्रमुख रहते हुए उन्होंने एक प्रवचन में कहा कि मेरे पास एक तनसिंह है, यदि मेरे पास कुछ और तनसिंह होते तो मैं संसार में बदलाव लाकर के बताता। ऐसे भाव प्रकट करना साधारण बात नहीं है, यह उनकी बहुत बड़ी उपलब्धि है। मैं ऐसा सोचता हूँ कि श्री क्षत्रिय युवक संघ के लोगों को उनकी स्मृति बनी ही रहनी चाहिए, उनके क्रियाकलाप, उनके साहित्य का अध्ययन अवश्य करना चाहिए, प्रेरणा अवश्य लेनी चाहिए, ऐसी मेरी मान्यता है।

(पृष्ठ एक का शेष)

शमी पूजन, धोलेरा

निबंध प्रतियोगिता

हम हमारे... भगवान को अपने अंदर अवतरित करने की शिक्षा मिली। हम आज श्री क्षत्रिय युवक संघ के तत्वावधान में विजयादशमी मना रहे हैं। ऐसे में समझने का प्रयास करें कि दशहरा क्या है? दस क्या हैं? यूं तो दस सिर थे, जिनको तोड़ फोड़ दिया जाता है, निर्जीव होते हैं, कोई जोर नहीं आता। लेकिन संघ समझाता है कि ये दस सिर हमारी इंद्रिया हैं जो बहिर्मुखी हैं, संसार में विचरण करती हैं, संसार से लेती हैं, देती हैं। संघ हमें बताता है बुराई को छोड़ें, अच्छाई को ग्रहण करें और उसे जीवन में उतारने का अभ्यास करवाता है। शिविरों में हम हमारे अंदर भगवान को अवतरित होते देखते हैं,अनुभव करते हैं, इससे लगता है कि हम सुधर रहे हैं। यूं लगता है सुधर ही गए हैं, जाते समय इस प्रकार का संकल्प भी उठता है कि जीवन बीतता जा रहा है दिन प्रतिदिन, वर्ष दर वर्ष। संघ के आह्वान पर हम जागृत नहीं हुए तो संसार में कोई ऐसा नहीं जो हमको जागृत कर दे। श्री क्षत्रिय युवक संघ हमको गुरु रूप में, भगवान के रूप में यही संदेश देता है कि हमको विजय प्राप्त करनी है इंद्रियों पर, इंद्रियां हमारी हैं इसीलिए हमें ही हम पर विजय प्राप्त करनी है यही विजयादशमी है, यही दशहरा है। विजयादशमी का पर्व गुजरात में परम्परागत रूप से शस्त्र पूजन एवं शमी पूजन के रूप में मनाया जाता है। इस वर्ष कोरोना के कारण बड़े समारोह नहीं हो पाए लेकिन स्थानीय स्तर पर परम्परा निभाई गई। संघ के गुजरात के कार्यालय 'शक्तिधाम' में वयोवृद्ध स्वयंसेवक अजीतसिंह जी धोलेरा के सानिध्य में कार्यक्रम रखा गया। धोलेरा गांव में भी परम्परागत रूप से कार्यक्रम मनाया गया। संघ के मध्य गुजरात संभाग व महेसाणा संभाग द्वारा इस अवसर पर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसे राजपूत युवा जागृति निबंध प्रतियोगिता का नाम दिया गया। लगभग 100 स्थानों पर छोटे-छोटे समूह में आयोजित इस निबंध प्रतियोगिता में प्रतिभागियों को संघ साहित्य की पुस्तकें भेंट स्वरूप दी गई। इसी दिन महाराव शेखाजी की जयंती भी आती है। इस उपलक्ष में भी विभिन्न स्थानों पर कार्यक्रम आयोजित किए गए। राजस्थान के अतिरिक्त अन्य स्थानों पर भी इस उपलक्ष में कार्यक्रम हुए। उत्तरप्रदेश के मौरना स्थित महाराजा मुकुटसिंह शेखावत संस्थान मौरना द्वारा मधी युद्ध स्मारक स्तम्भ एवं महाराव शेखाजी की मूर्ति पर पुष्पांजलि अर्पित कर कार्यक्रम आयोजित किया गया। वक्ताओं ने महाराव शेखाजी के जीवन वृत के साथ-साथ महाराजा मुकुटसिंह के बिजनौर आने व मधी जनपद को आततायी तुर्क के अत्याचार से मुक्त करवाने के इतिहास के बारे में जानकारी दी। बाड़मेर में सिवाणा गांव की वीर दुर्गादास राठौड़ शाखा में भी दशहरा पर्व मनाया गया। जयपुर में प्रताप युवा शक्ति द्वारा शस्त्र पूजन कर दशहरा मनाया गया। वहीं गुजरात गौंडल शहर से भी राजपूत युवक मंडल ट्रस्ट द्वारा शस्त्र पूजन किया गया।

परेऊ बंधुओं को पितृशोक

संघ के स्वयंसेवक रुपसिंह परेऊ व प्रेमसिंह परेऊ के पिता **श्री पर्वतसिंह जी** का 7 अक्टूबर को देहावसान हो गया। 5 पुत्रों के भरे पूरे परिवार वाले पर्वतसिंह के सभी पुत्रों ने संघ के शिविर किए हैं व सांघिक गतिविधियों से जुड़े है। परमेश्वर दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देवें एवं शोक संतप्त परिवार को संबल प्रदान करें।

श्री पर्वतसिंह जी

।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।।

हार्दिक श्रद्धांजलि एवं वंदन

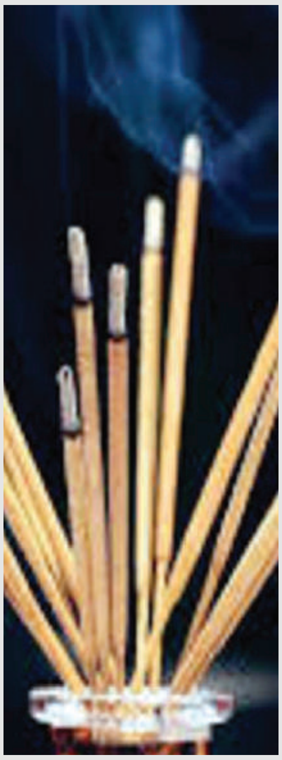

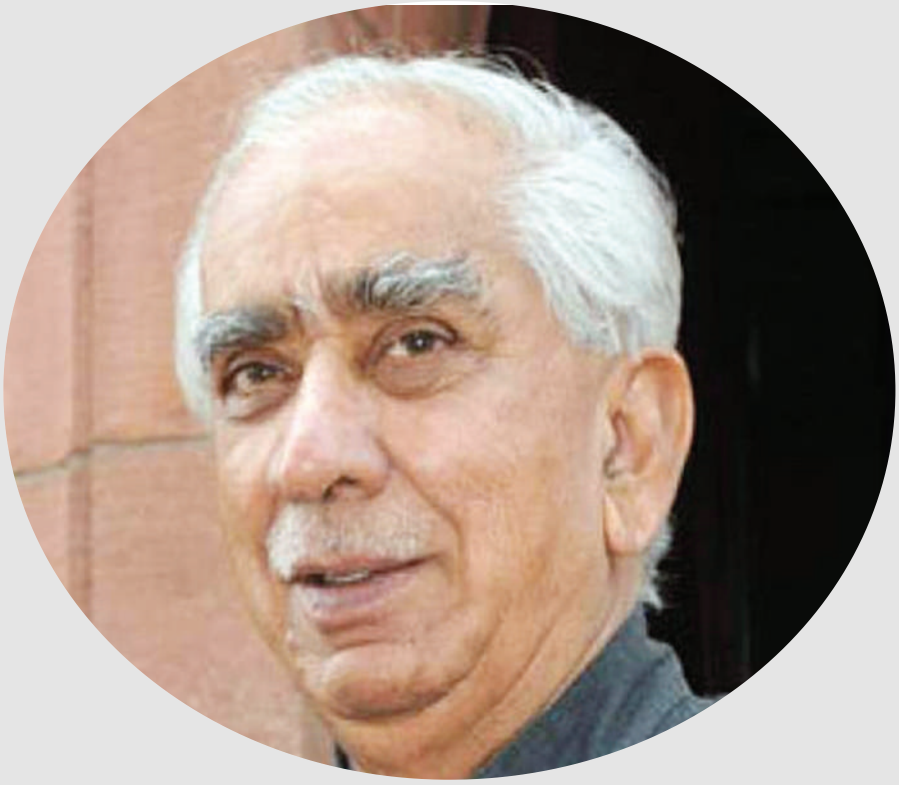

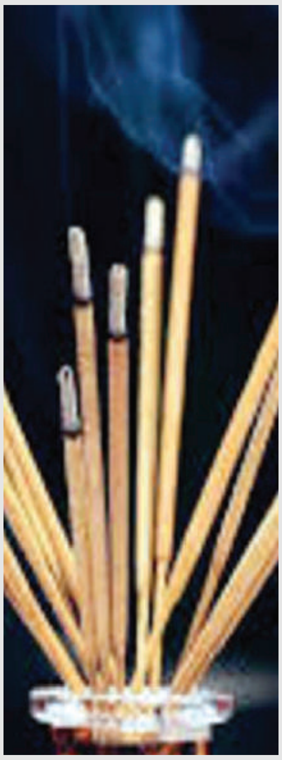

अपनी रणनीतिक कुशलता के बल पर विश्व राजनीति के पटल पर अपनी अमिट छाप छोड़कर सम्पूर्ण मरुधरा को गौरवान्वित करने वाले भारत के पूर्व वित्त, रक्षा एवं विदेश मंत्री आदरणीय जसवंतसिंह जी जसोल के देहावसान पर हार्दिक श्रद्धांजलि एवं उनकी प्रेरणादायी जीवन यात्रा को श्रद्धापूर्वक नमन।

श्रद्धानवत

महावीरसिंह, देणोक	**मनोहरसिंह**, दुजार	**विक्रमसिंह**, मिरगानैणी	**चेनसिंह**, सिराणा
मनोहरसिंह, कुकनवाली	**राजूसिंह**, काठाड़ी	**प्रेमसिंह**, रेवाड़ा	**राजूसिंह**, बांटा
बाबूसिंह, सोनू	**रघुवीरसिंह**, जाफली	**गिरधरसिंह**, सिरघुवाला	**रूपसिंह**, शेरगढ़
भोजराजसिंह, मराज का तला	**भोमसिंह**, तिबनियार	**भंवरसिंह**, निम्बोला	**लीलू सिंह**, सुल्ताना
नारायण सिंह, आइन्ता	**गुलाबसिंह**, शोभाला जेतमाल	**छतरसिंह**, सोढाकोर	**दिलीपसिंह**, गड़ा
भगवतसिंह, करड़ा	**खुमानसिंह**, मिठौड़ा	**बाबूसिंह**, रेवाड़ा जेतमाल	**पन्नेसिंह**, रेवाड़ा जेतमाल
लाधुसिंह, रेवाड़ा जेतमाल	**विक्रमसिंह**, आकोली	**मनोहरसिंह**, आकोड़ा	**थानसिंह**, भादरिया
लाधुसिंह, मालूंगा	**ईश्वरसिंह**, मवड़ी	**दिलीपसिंह**, ईडवा	**मोकमसिंह**, फुलिया
जब्बरसिंह, भिंयाड़	**कर्णसिंह**, मूठली	**बुधसिंह**, केतु	**सुरेंद्रसिंह**, कुलाची
सवाईसिंह, धुड़ीला	**लूणसिंह**, भाडली	**पर्बतसिंह**, वरिया	**खेतसिंह**, चांदेसरा

एवं समस्त स्वयंसेवक सूरत

।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 (दूरभाष: 2466353 व 2466387) से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org